ISSN 2394-5303

Printing Area

Issue-73, Vol-03, February 2021

International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Dist.Nanded

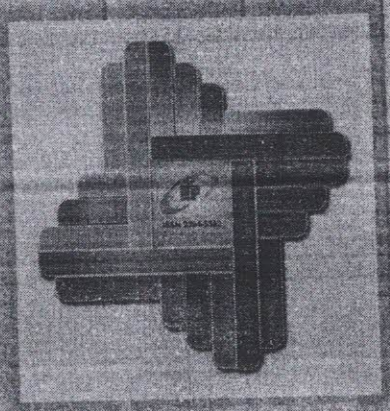

Dr. [illegible] Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

27] नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श
शेख परविन बेगम शेख इब्राहीम, डॉ. प्रा. संतोष येरावार–नांदेड ||123

28] ''परिवर्तित भाषिक परिदृश्य और हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ''
प्रा. डॉ. सूर्यकांत शिंदे –सोनखेड ||127

29] आधुनिक नगरीय जीवन–शैली तथा उसके समस्याओं का अध्ययन
छाया कुमारी–मधेपुरा ||131

30] भारत निर्माण कार्यक्रम से ग्रामीण विकास
रत्नाकर भारती,मधेपुरा ||135

31] भारतीय में सुशासन और भ्रष्टाचार
नरेन्द्र कुमार,मधेपुरा ||139

32] भारत में घरेलु पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ.भुनेश्वर टेंभरे–मण्डला म.प्र. ||144

33] ज्ञानरचनावादी पद्धतीचा मराठी भाषा विकसनावर होणारा परिणामाचा अभ्यास
कल्पना उदयराज बन्सोड–चंद्रपूर ||148

34] निसर्ग आणि विज्ञाननिष्ठ कवी : आ.य.पवार
प्रा.डॉ.गोपीनाथ पांडुरंग बोडखे,कडा, ता. आष्टी जि. बीड ||153

35] चारीमेराच्या संदर्भात........ (कादंबरी)
प्रा. डॉ. अरविंद भ. कटरे–साकोली जि. भंडारा ||157

36] भारतातील ग्रामीण स्त्रीयांच्या सामाजीक स्थितीचा अभ्यास
डॉ. कावळे उमराव विठ्ठलराव–वसमत जि.हिंगोली ||165

37] टोमॅटो उत्पादन व विपननातील समस्या
प्रा. साहेबराव दौलत निकम,नाशिक ||167

38] महिला सबलीकरणाच्या अनुषंगाने क्रीडा क्षेत्राचे महत्व – एक अध्ययन
डॉ. वसंत निनावे–मोवाड, जि नागपूर ||170

39] अहिराणी लोकसाहित्य थोडक्यात परिचय
प्रा.डॉ.राजेंद्र आत्माराम पाटील,नंदुरबार ||173

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

ADARSH SHIKSHAN PRASARAK SHIKSHAN SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

और जो रूपये मिले, वह दूसरो को दे दो आप बैठ रामराम करो।"८

अत: प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में भारतीय किसान की स्थिति का बहुत ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। किसान की संघर्षशील स्थिति के पीछे कारण है, जिसमें कहीं न कही वह खुद भी जिम्मेदार है, जमींदार है, जमींदार और सरकार द्वारा किए गए अधिकांश शोषण को किसान कानूनी मानता है। किसान ने विद्रोह तब किया जब शोषण की सीमा बहुत आगे बढ जाती है। किसान के जीवन की दुर्बलता और मन की दृढता दोनों का समावेश कर प्रेमचंद ने किसान के जीवन के यथार्थ का यथा अर्थचित्रण किया है। जिसमें वह अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ, टूटता हुआ, समझौता करते हुए भारतीय किसान का व्यक्तित्व प्रेमचंद की रचनाओं में उभरकर आता है। किसान भारतीय संस्कृति का संवाहक और मूलाधार है। इसी रास्ते से भारतीय संस्कृति की निर्मिती में भारतीय किसानों का योगदान रहा है। आजाद भारत में भी प्रेमचंद के प्रिय किसान छोटे-छोटे सुखो के लिए मोहताज है। आज भी वे 'होरी' की तरह यह गाने को मजबूर है, "हियाजरत रहत दिन रैन"।

संदर्भ :-

१) आचार्य रामचंद्र शुक्ल -हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.२९२
२) रामविलास शर्मा - प्रेमचंद और उनका युग, पृ.३३२
३) प्रेमचंद - हतभागे किसान, पृ.३२
४) प्रेमचंद - गोदान, पृ.३२
५) प्रेमचंद - किसानों का कर्ज, पृ.१९३२
६) प्रेमचंद - गोदान, पृ.१८९
७) प्रेमचंद - प्रेमाश्रम, पृ.३२
८) प्रेमचंद - गोदान, पृ.२७२

❑❑❑

27

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श

शेख परविन बेगम शेख इब्राहीम,
(शोध छात्रा)
स्वा.रा.ती.म.विश्विद्यालय,नांदेड ।

डॉ. प्रा. संतोष येरावार ,
(हिंदी विभाग प्रमुख) ,
देगलूर महाविद्यालय देगलूर ।
ता. देगलूर जि. नांदेड

****

वर्तमान समय में साहित्य के अंतर्गत विविध ा नवविमर्श पर अध्ययन –विश्लेषन और चर्चा कि जा रही है । जो विषय अध्ययन के योग्य नहीं समझे गए उन्हें हाशिये से केंद्र बिंदू में लाने का कार्य साहित्य अंतर्गत किया जा रहा है । जैसे – दलित विमर्श , आदिवासि विमर्श , स्त्री विमर्श , किन्नर विमर्श ,वृध्द विमर्श आदी चर्चित रहे है , किंतु आज साहित्य के अंतर्गत 'अल्पसंख्यक विमर्श' कि भी चर्चा कि जा रही है । 'विमर्श' से तात्पर्य है विचार करने की पध्दती से लिया जाता है ।

भारत देश यह विविध संस्कृति सभ्यताओं से समृध्द राष्ट्र है । यहाँ पर सभी जाती , धर्म के लोग निवास करते है । 'अल्पसंख्यक' इस शब्द का उच्चारण करते ही हमारा ध्यान मुस्लिम , सिक्ख ,ईसाई , बौध्द , जैन , पारसी आदी समुदायों की ओर चला जाता है । किंतु 'अल्पसंख्यक' शब्द की कोई मान्य परिभाषा नहीं है ।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद २९ व ३० में 'अल्पसंख्यक' शब्द का उल्लेख हुआ है , किंतु उसमें उसे परिभाषित करने का प्रयास नहीं किया गया है । ''अल्प + संख्यक , इन दो शब्दों से मिलकर 'अल्पसंख्यक' बना है । 'अल्प' का अर्थ कम व 'संख्यक' से आशय संख्या से है ।''१

अर्थात वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरो के मुकाबले कम हो । परंतु जनसंख्या अनुपात कितना कम हो , इसकी कोई परिभाषा नहीं है ।

'अल्पसंख्यको' के संबध में संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदक फ्रेंसिस्को कॉपोटोर्टी ने एक वैश्विक परिभाषा दी , जिसके अनुसार ''किसी राष्ट्र–राज्य में रहनेवाले ऐसा समुदाय जो संख्या में कम हो और सामाजिक , राजनीतिक और आर्थिक रुप से कमजोर हो एवं जिनकी प्रजाति धर्म भाषा आदि बहुसंख्यकों से अलग होते हुए भी राष्ट्र के निर्माण , विकास , एकता , संस्कृति , परंपरा और राष्ट्रीय भाषा बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हो तो ऐसे समुदायों को उस राष्ट्र–राज्य में अल्पसंख्यक माना जाना चाहिए ।''२

'अल्पसंख्यक' समूह को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है । १• धार्मिक अल्पसंख्यक २• भाषाई अल्पसंख्यक । धार्मिक अल्पसंख्यक समूह के अंतर्गत मुस्लिम , सिक्ख , बौध्द , ईसाई ,पारसी व जैन आदी है । भाषाई 'अल्पसंख्यक' लोगो का वह समूह है जिनकी मातृभाषा उस राज्य की मुख्य या प्रमुख भाषा से भिन्न हो, अर्थात व्दितीय भाषीय 'अल्पसंख्यक', जिनमें वे व्यक्ति आते है , जो 'बहुसंख्यक' हिंदी भाषी लोगो की संख्या में कम हो । जैसे – तेलुगू , बंगला , उर्दू , कन्नड , काश्मिरी आदी भाषा–भाषि ।

स्वाधिनता के बाद भारत में हिंदुओं की संख्या अन्य समुदायों से अधिक थी , इसलिए हिंदुओं को 'बहुसंख्यक' तथा अन्य समुदायों को 'अल्पसंख्यक' का दर्जा दिया गया । 'अल्पसंख्यक' समुदाय स्वतंत्र रुप से साहित्य का केंद्रीय विषय बन नहीं सकें किंतु मुस्लिम समुदाय इसके लिए अपवाद है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस समुदाय पर बहुत कुछ लिखा गया । स्वंय मुस्लिम लेखकोंने तथा मुस्लिमेत्तर लेखकों ने भी मुस्लिम समाज उनके विचार , उनका व्यवहार तथा उनकी स्थिती आदी पर बहुत विस्तृत रुप से लिखने का पर्यास किया है । नई सदी में भी कई उपन्यासकारों ने अल्पसंख्याकों के जीवन को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखने का कार्य किया है । जिनमें अब्दुल बिस्मिल्लाह , डॉ.राही मासूम रजा , मंजूर एहतेशाम , अनवर सुहैल तथा नासिरा शर्मा आदी उपन्यासकारों के नाम उल्लेखनिय है ।

नसिरा शर्माजी ने अपने उपन्यासों में मुस्लिम जीवन विषयक विचार , उनके दर्शन , व्यवहार एवं स्थिती को लेकर अंत्यंत यथार्थता के साथ अंकन करने का कार्य किया है ।

देश विभाजन के बाद राजनीति ने धर्म को आधार बनाकर प्रेमपूर्वक रहनेवाले भारतवासियों को एक झटके में हिंदू और मुसलमान बनाकर रख दिया । जिस कारण हिंदू–मुसलमानों की साँझा संस्कृति में एक तरह की खटास लादी । विभाजन से जन्मी कडवाहट ने धर्म की रेखा ही नहीं खिची बल्कि भारतीय मुसलमानों की देशभक्ती पर भी आशंका व्यक्त की जाने लगी जिसे नासिरा शर्माजी ने 'जिंदा मुहावरें' उपन्यास में बताया है । 'जिंदा मुहावरें' उपन्यास में पुलिस की दकियानूसी वृत्ती का चित्रण नासिरा शर्माजी ने किया है । निजाम जब पाकिस्तान से अपने परिवार से मिलने के लिए भारत आनेवाला था उस रात पुलिस रहीमउद्दीन के घर की तलाशी लेना चहाती है । रहीमउद्दीन उन्हें कहता है कि निजाम पराया नहीं है वह मेरा बेटा है , मुझसे मिलने आ रहा है । फिरभी पुलिस सुनती नहीं और घर की तलाशी लेती है । लेकिन उन्हें संदेहजनक कुछ भी नहीं मिलता । अपनी हुई बेइज्जती के कारण रहीमउद्दीन अपनी जान गवा देता है , तब इस उपन्यास का एक पात्र कहता है ''हमारी शराफत , खानदानी इज्ज़त , वतनपरस्ती सब कुछ आपने अपनी वर्दी के नींचे रौंद डाली?''३ यहाँ पर सुरक्षा के नाम पर कि जानेवाली पुलिस प्रशासन की शोषन वृत्ति का चित्रण किया है ।

जब विश्व में सांस्कृतिक एकता की बात होती है , तो भारत देश का जिक्र होना लाजमी है , क्योंकि देश में अलग–अलग जाति एवं धर्म के लोग रहते है । इसलिए भारत में विविधता में एकता दिखाई देती है । हिंदुस्तान में स्वातंत्रतापूर्व

ADAT VIDARBHA EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

से हिंदू–मुस्लिम आपस में टकराने के पश्चात भी मुहब्बत के रिश्ते में मिले हुए हैं । इस मिलन के बाद यहाँ के संस्कसरों में दो संस्कृतियाँ यूँ घूली–मिली है मानो दोनों एक दूसरे के पूरक हो । 'पारिजात' उपन्यास तीन गहरे मित्रों के परिवार की कहानी है । पहिला परिवार प्रो. प्रल्हाद दत्त और प्रभा दत्त का पुत्र रोहन है । दूसरा परिवार जुल्फिकार और नुसरतजहाँ का है जिनका पुत्र काजिम है । तिसरा परिवार बशारत हुसैन और फिरदौसजहाँ का है जिनका पुत्र मोनिस और पुत्री रुही है । ये तीनों परिवार हिंदू–मुस्लिम एकता के साक्षात प्रतिबिंब है । जब तीनों परिवारों के बीच अकेली लड़की 'रुही' पैदा होती है , तो हर कोई बेटी की तमन्ना पाल बैठा । तीनों परिवार के लोग 'रुही' को अपनी बेटी मानते थे । '' यह मेरी बेटी है । प्रल्हाद दत्त रुही को देखकर कहते है । तो यह चाँद तो मेरा है , जुल्फिकार उसे गोद में ले उछालते । लड़कियाँ तो घर की रौनक होती है । ..... चारों बच्चे इस मोहब्बत के पालनें में झूला झूलते हुए बड़े ,सारे घर इनके अपने थे ।''४

तो वही आज के समय में आपसी सद्भाव संकट की स्थिती से गुजर रहा है । सांप्रदायिक्ता के मुद्दे को लेकर आज देश में जो बहसे चल रही है , उसमें समाधान की पहल कम–विवाद की संभावना अधिक बढ़ती हुई दिखाई देती है, कयोंकि साम्राज्यवादीयों द्वारा बोया गया सांप्रदायिक्ता का बीज तेजी से फलने–फुलने लगा और यह भारतीय राजनीतिका अनिवार्य हिस्सा बन गया है । जिसका फायदा कुछ धर्माध लोग ले रहे है । 'ज़ीरो रोड' उपन्यास में लेखिकाने सिध्दार्थ के जरिए एक ऐसे पात्र का सृजन किया है , जो नियति की डोर से बँध ो कठपुतली की तरह नाचता है । इस कठपुतली को धर्माध लोंगों ने ही 'हामिद' का कातिल बना दिया और इसी कारण उसे अपना शहर छोड़कर दुबई जाना पड़ता है । छोटे शहरों में सांप्रदायिक दंगो की पृष्ठभूमिं कैसे तैयार होती है? यह इस उपन्यास में स्पष्ट होता है । नासिराजी सांप्रदायिक्ता के स्वरुप पर प्रकाश डालते हुए 'ज़ीरो रोड' उपन्यास के माध्यम से हिंदू–मुस्लिमों में व्याप्त होनेवाली घृणा और परिणामस्वरुप उसकी प्रतिक्रिया और व्यक्ति के चढ़े जुनून का चित्रण कर यह संदेश दिया है की जुनून में व्यक्ति मानवता तक भूल जाता है , जबकि आम आदमी ऐसा करना नहीं चहाता ।

'ज़ीरो रोड' उपन्यास में मुन्ना हाफिज का मंझला लड़का अपना असली नाम छुपाकर प्रोफेशनल नाम काली रख लेता है । यानी कासीम कमाली लैंड इंटरप्राइजर । सब उसको बंगाली समझते थे । उसने ऐसा जान बूझ कर किया है , ताकि 'रामप्रसाद जी' जैसे लोग उस तक पहुँचने में झिझके नहीं ।''५ बढ़ते सांप्रदायिक विव्देष के कारण मुस्लिम समुदाय के व्यापारी लोंग अपना नाम बदलकर धर्म छुपाने के लिए अभिशप्त होते जा रहे है । काली नाम धारण करने से लोग उसके पास बेहिचक जाते है । लोगो को यह याद भी नहीं आता कि काली प्रॉपर्टी डीलर मून्ना हाफिज का बेटा है । ''याद भी कैसे रहता जब वह सलाम की जगह नमस्ते करता और दीवाली में दुकान पर लक्ष्मी की पूजा करवाता ।''६

'ठीकरे की मंगनी' यह उपन्यास मुस्लिम समाज की स्त्री के मर्मांतक की कहानी है । यह उपन्यास परंपरा और आधुनिकता , खानदानी रिवयतों से जुडा हुआ है । जिसके अनुसार जन्म के साथ ही किसी लड़की की मंगनी कर दी जाती है । फिर शुरु होता है दर्द और दमन का लंबा सिलसिला । इस उपन्यास में देहाती मुस्लिकम परिवार के महरुख की कहानी है । एक मध्यमवर्गीय परिवार में पिछलें चार पीढ़ियो से जन्मी यह पहली लड़की है । इसलिए आम परिवार में लड़की पैदा होने के बाद जैसा माहोल होता है वैसा नहीं था , बल्कि खुशी के मारे परिवार के सारे लोग आनंद से झूम उठे थे । इससे पहले उनके परिवार में लड़कियाँ नहीं जी पाती थी , इसलिए उसके पैदा होते ही उसकी खाला ने टोटके की रस्म के मुताबिक गंदगी से भरे ठीकरे में एक रुप्या डालते हुए कहा था , ''खालिदा , आज से यह लड़की मेरी हुई ।''७

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | February 2021 Issue-73, Vol-03 | 0126

इस तरह यह उपन्यास उस मुस्लिम स्त्री की कहानी कहता है , जो तमाम रुढ़ियों और घुटन से निकलकर अपनी अलग पहचान बनाने के लिए व्याकुल है ।

भारतीय मुस्लिम समाज का आर्थिक पिछड़ापन ही उनकी अनके समस्याओंका कारण है । मध्यवर्ग की आर्थिक परिस्थिति संतोषजनक नहीं होती है । जिसके चलते मध्यमवर्गीय माता–पिता अपने बच्चों की पढ़ाई पूरी करने में असमर्थ हो जाते है ।

'अक्षयवट' उपन्यसास के सलमान की यही त्रासदी है । वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है ,किंतु पैसों के अभाव में पढ़ नहीं पाता वह ''डॉक्टर बनना चाहता था । अब्बा ने बड़े भाई की इंजीनियरिंग की पढ़ाई पर इतना खर्च कर दिया था कि, अब उनके बूते की बात न थी कि दूसरे बेटे को डॉक्टरी पढ़ाएँ । ''८

मध्यवर्ग के कतिपय युवक उच्च शिक्षित होने पर भी नौकरी के अभाव में हालात से समझौता कर कोई भी काम करने पर विवश हो जाते है । 'अक्षयवट' उपन्यास के सल्लन की यही व्यथा है । ''अब्बा रिटायर हो रहें है । बज्जों की शदी का लम्बा–चौड़ा खर्च शुरु । क्या होगा आगे ? कहाँ जाऊँ ? कैसे नौकरी ढूँढूँ ? जुगनू ठीक ही कहता है कि मुझे कोई दुकान खोलनी ही पड़ेगी । बचपन के सपने कभी साथ नहीं देते .....।''९

भारत में अन्य समुदायों की अपेक्षा मुस्लिम समुदाय की स्त्रियों की हालात और भी बदत्तर है । शिक्षा , स्वास्थ्य , रोजगार , स्वतंत्रता हर मामले में मुस्लिम स्त्री की दशा शोचनीय है , किंतु समय के साथ हर व्यवस्था या समाज में परिवर्तन होता रहा है । उसी तरह मुस्लिम समाज में भी परिवर्तन को देख सकते है । एक समय था ,जो कि मुस्लिम स्त्री को घर की चार दीवारी में कैद रहकर अपनी जिंदगी गुजारनी पड़ती थी । अपने अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं थी । लेकिन समकालिन समय में मुस्लिम स्त्रायाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हुई है । शिक्षा के कारण स्त्री में रुढ़ियों , परंपराओं और अंधविश्वासों के प्रति विश्वास कम हुआ नजर आता है और इसमें साथ दे रहें आज के मुस्लिम युवक और महिलाएँ जो की मुस्लिम स्त्रियों को उच्चशिक्षित बनाने के पक्ष में है ।

'कागज की नाव' उपन्यास का पात्र ज़ाकिर कहता है ,''पहले तो हमारे यहां लड़किया पढ़ नहीं पातीं , पढ़ती है , तो पांचवां–छठा जैसे–तैसे पास कर लिया । चलो इलाका पिछड़ा है , मगर जनवा जहां लड़कियां बी.ए , एम. ए है , हम उन्हें घर की मैना बना देते है । काम मर्दो के लिए नहीं है तो उन्हें क्या मिलेगा । यह प्रॉब्लम अपनी जगह है , मगर बात हमारी सोच की भी है कि हम लड़कियों की आजादी से डरते है । एक हिस्सा रोज़ नए तजरबे से गुजरता है , देसरा घर की सियासत में डूबा कुंए का मेढ़क बना है । जवान दोंनो हैं मगर बराबरी से जीने का हक़ आधि आबादी को नहीं है । जो लड़के माहौल बदलना चाहते है तो मां–बाप आड़े आते है । जहां बहुएं ठीकठाक है वहां उन्हें मिया का न साथ मिलता है , न आजादी ।''१०

यहाँ पर लेखिकाने शिक्षा से संबधित दोनों पहलुओं को स्पष्ट किया है । तो दूसरी ओर 'ठीकरे की मंगनी ' इस उपन्यास में महरुख को रफत के साथ शादी से पहले शिक्षा के लिए दिल्ली भेजना मुस्लिम परंपरा के विरुध्द समझा जाता है और जिसका विरोध महरुख के चाचा और परिवार के सभी सदस्य करते है , तब महरुख की अम्मी कहती है की , '' वह जमाना कब का लद चुका है , जब औरत नए–नए पकवान बनाकर , ससुरालवालों कि ख़िदमत करके मियाँ का दिल जीतती थी, आज तो उसे इन सबके साथ बाहरी दुनियां में भी अपने पैर जमाने है । घर–बाहर दोनों जगह अपनी खुबी का सिक्का जमाना होता है , फिर पढ़ी–लिखि लड़कियाँ किसी पर बोझ बनकर नहीं रहती , बल्कि गिरे वक्त में घर को मर्द की तरह संभालती है । ''११

इस प्रकार नासिरा शर्माजी के उपन्यासों में 'अल्पसंख्यक' मुस्लिम समाज की स्थिति का

बहुआयामी चित्रण दिखाई देता है । जो केवल साहित्य का अध्ययन नहीं हैं, बल्कि समाज का अध्ययन भी है, जो 'अल्पसंख्यक' समाज की स्थिती और सांप्रदायिकता के कारण तब्दील होता जीवन निरंतर विभाजन के दर्द को ढ़ोता हुआ , असुरक्षा, अविश्वास और संशय से ग्रस्त 'अल्पसंख्यक' मुस्लिम समाज है । मुस्लिम धर्म प्रेम , भाईचारे का संदेश देनेवाला धर्म है । जिसे हर मुसलमान स्विकार करता है । किंतु कुछ अवसर वादीयों ,स्वार्थी लोगो द्वारा अपने ढंग से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया जाता है । जिसका परिणाम भोले–भाले मुसलमानों को भुगतना पड़ता है । मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिती और शिक्षा के महत्व आदी बातों को बहुत ही खुबसूरती और संजीदगी के साथ उपन्यासों में व्यक्त किया गया है ।

संदर्भ सूची

१.readerblogs.navbhrattimes.indiatimes.com
2-https://m.bharatdiscovery.org
३. जिंदा मुहावरे : नासिरा शर्मा, पृ. ६३
४. पारिजात : नासिरा शर्मा पृ. ३५
५. ज़ीरो रोड : नासिरा शर्मा पृ. १५५
६. वही : नासिरा शर्मा पृ. १५५
७. ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा पृ. १७
८. अक्षवट : नासिरा शर्मा पृ. ५७
९. वही : नासिरा शर्मा पृ. ५८
१०. कागज़ की नाव : नासिरा शर्मा पृ. २३५
११. ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा पृ. २६

□□□

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

28

''परिवर्तित भाषिक परिदृश्य और हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ''

प्रा. डॉ. सूर्यकांत शिंदे
हिंदी विभागाध्यक्ष तथा शोधनिर्देशक
लोकमान्य महाविद्यालय, सोनखेड

****

प्रास्ताविक :

वर्तमान समय में हिंदी भाषा अपने पारंपरिक दायरे से हटकर व्यापक स्वरूप धारण कर चुकी है। हिंदी भाषा ने राजभाषा, राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा आदि विभिन्न भूमिकाओं में अपना एक स्थान निशिचत कर लिया है। अब इन भूमिकाओं से आगे निकलकर हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में तेजी से अग्रसर हो रही है। वर्तमान ईक्कीसवी शताब्दी को कम्प्यूटर सदी कहा जाने लगा है। एक अर्थ में यह सूचनाओं के विस्फोटक का युग है कहना अत्युक्ति नहीं होगी। आज कम्प्यूटर केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहा है। आज उसने छोटे–छोटे नगरों तथा कसबों के अधिकतर लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसे वातावरण में हर भाषा में रोजगार की मांग बढ़ना स्वाभाविक है। एक समय था भाषा शिक्षण के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। आज भी उसकी आवश्यकता है लेकिन धीरे–धीरे बडी तीव्रता के साथ आज रोजगारक्षम पाठ्यक्रमों की मागं बढ़ती जा रही है, इसलिए हर भाषा को समय के साथ रहना अनिवार्य बन जाता हैं। आज के दौर में यदि कोई भाषा रोजगार देने में असमर्थ है तो वह भाषा संकुचित दायरे में बँधकर रह जाती है।

आज भाषा के सामान्य प्रकार्यों की अपेक्षा